



दलहन समाचार



भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर

vol 4 [k.M 2

[tqkb&fnl Ecj] 2010

fo"k; oLrq

अगेती अरहर के क्षेत्रफल में आशातीत बढ़ोत्तरी.....	2
नूतन प्रजातियाँ.....	3
माडल प्रशिक्षण का आयोजन.....	4
अरहर मिलिंग के सह-उत्पाद का खाद्य उपयोग.....	4
उर्ध्वाधर थ्रेशर से उर्द की मड़ाई.....	4
कृषक प्रशिक्षण आयोजित.....	5
राज्य स्तरीय दलहन संगोष्ठी आयोजित....	5
कृषक समिति द्वारा चना बीज उत्पादन....	5
सामयिकी.....	6
तराना दलहन का.....	7
निदेशक की कलम से.....	8

I ã kn d e. My

डा. एन. नदराजन	अध्यक्ष
डा. सी. चट्टोपाध्याय	सदस्य
डा. पी.एस. बसु	सदस्य
डा. एम.एस. व्यंकटेश	सदस्य
डा. आदित्य प्रताप	सदस्य
श्री दिवाकर उपाध्याय	सदस्य सचिव

I ã Fkku LFkki uk fnoI I ekjkg dk vk; kst u

भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान का 17वाँ स्थापना दिवस दिनांक 5 सितम्बर, 2010 को धूमधाम से समारोहपूर्वक मनाया गया। मुख्य समारोह में चन्द्र शेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डा. जी.सी. तिवारी मुख्य अतिथि तथा क्षेत्रीय परियोजना निदेशक डा. ए.के. सिंह विशिष्ट अतिथि थे। परियोजना समन्वयक (अरहर) डा. एन. डी. मजूमदार ने सभागार में उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत किया। संस्थान के निदेशक डा.एन. नदराजन ने संस्थान की उपलब्धियों और क्रियाकलापों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों और मेहनत से विभिन्न दलहनी फसलों की नूतन और उन्नतशील दो दर्जन से अधिक प्रजातियों का विकास हुआ है। विगत वर्ष में ही संस्थान द्वारा विकसित काबुली चना, मूँग और उर्द की चार नई प्रजातियाँ देश के विभिन्न राज्यों में खेती के लिए संस्तुत की गई हैं। संस्थान ने दलहनी फसलों के लिए विशिष्ट थ्रेशर विकसित किया है। दलहनी फसलों में हानि पहुँचाने वाले रोगों और कीटों से बचाव की कारगर तकनीकी का विकास किया गया है।

मुख्य अतिथि डा. तिवारी ने संस्थान की उपलब्धियों की सराहना करते हुए कहा कि दलहन उत्पादन सरकार की शीर्ष वरीयताओं में है। क्योंकि इनकी कीमतें बाजार में बढ़ती



जा रही हैं। संस्थान के वैज्ञानिकों का आवाहन करते हुए उन्होंने कहा कि देश को आपसे बहुत आशायें हैं। डा. तिवारी ने बदलते हुए पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए उच्च तापमान और शीत मौसम में भी उत्पादन देने में सक्षम प्रजातियों के विकास पर बल दिया। विशिष्ट अतिथि डा. ए.के. सिंह ने अपने उद्बोधन में नई प्रजातियों और तकनीकी के व्यापक प्रसार पर बल दिया। उन्होंने कहा कि वर्तमान में उपलब्ध प्रजातियों और तकनीकी में इतनी संभावनायें हैं कि यदि इनका समुचित प्रचार

प्रसार हो जाये और ये किसानों के खेतों तक पहुँच जायें तो देश में दलहन उत्पादन स्वतः दो गुना हो जायेगा।

इस अवसर पर संस्थान के उत्कृष्ट वैज्ञानिक तथा अन्य कर्मियों को पुरस्कृत किया गया। संस्थान के नये प्रकाशन का विमोचन भी किया गया।

सायंकाल रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें संस्थान के वैज्ञानिकों तथा अन्य कर्मियों के बच्चों ने मनभावन नृत्य और गीत प्रस्तुत किये।

vxrh vjgj ds {ks=Qy
ea vk' kkrhr c<kRrjh

भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर द्वारा भारत सरकार के कृषि एवं सहकारिता विभाग द्वारा संचालित आइसोपाम योजना “आदर्श बीज ग्राम पद्धति” फतेहपुर व रमाबाई जनपदों में वर्ष 2006-07 से 2009-10 तक चलायी गयी। परियोजना का मुख्य उद्देश्य कृषकों द्वारा चयनित अरहर व चना की प्रजातियों का उनकी सक्रिय भागीदारी से गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन करके ग्राम स्तर पर बीज स्वावलम्बन प्राप्त कराना था। फतेहपुर के मलवाँ विकास खण्ड के अलीपुर, पहर व मौहार ग्राम सभाओं में अरहर के बीज उत्पादन का कार्यक्रम चलाया गया। अरहर फसल पर-परागित होने के कारण तीनों गाँवों में 5 से 10 हेक्टेयर के ब्लाक कृषकों द्वारा बनाकर बीज उत्पादन बड़े पैमाने पर किया गया। चयनित गाँवों में जोत का आकार एक हेक्टेयर से 5 हेक्टेयर के बीच में तथा सिंचाई के पर्याप्त साधन उपलब्ध होने के कारण कृषकों ने अगेती अरहर को बीज उत्पादन हेतु चुनाव किया।

परियोजना संचालित करने के पहले सर्वेक्षण में पाया गया कि अगेती अरहर की खेती करने में नीलगाय बहुत बड़ा अवरोध हैं

जबकि खेती की परिस्थितियाँ अनुकूल हैं। कृषकों को ब्लॉक बनाकर अगेती खेती के लिए प्रेरित किया गया। खरीफ 2007 में 80 कृषकों के खेत पर 22 हे. क्षेत्रफल में ग्राम सभा अलीपुर व मौहार में बुवाई की गयी। ब्लाक में बुवाई करने पर पाया गया कि सभी भागीदारी कृषकों की सजगता से नीलगाय का प्रकोप घटकर मात्र 5 से 10 प्रतिशत तक रहा। उत्तर प्रदेश बीज प्रमाणीकरण संस्था, इलाहाबाद तथा राष्ट्रीय बीज निगम से समन्वय स्थापित कराकर 240 कुन्तल गुणवत्तायुक्त बीज तैयार किया गया। जनवरी 2008 में 130 कुन्तल बीज राष्ट्रीय बीज निगम द्वारा खरीदा गया। कृषकों को प्रति कुन्तल रू. 800-1200/- अतिरिक्त लाभ बीज उत्पादन द्वारा प्राप्त हुआ। वर्ष 2008 में कृषकों ने चौड़गरा किसान सेवा समिति का गठन करके पंजीकृत कृषक संगठन बनाया। समिति के माध्यम से भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों की तकनीकी सलाह द्वारा खरीफ 2008 में 20 हे. व खरीफ 2009 में 23 हेक्टेयर क्षेत्रफल में यू.पी.ए.एस. 120 प्रजाति के जनक बीज से क्रमशः 180 कुन्तल व 270 कुन्तल बीज का उत्पादन किया गया। कृषकों के समस्त अरहर के खेतों का उत्तर प्रदेश बीज प्रमाणीकरण संस्था द्वारा पंजीकरण कराया गया। समिति ने कुल उत्पादित बीज का 60 प्रतिशत राष्ट्रीय बीज निगम, कानपुर को बेच दिया।

इस प्रकार गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन करने से कृषकों ने पाया कि प्रति इकाई क्षेत्रफल में उत्पादन में 25 से 30 प्रतिशत वृद्धि होती है तथा 30-35 प्रतिशत शुद्ध मुनाफा प्राप्त होता है। समिति द्वारा बीज भण्डारित करके बीज के रूप में बिक्री नजदीक के बाजार के स्थानीय व्यापारियों, बीज विक्रेताओं, जनपद के अतिरिक्त आस-पास के कृषकों में की गयी। कृषक समिति के माध्यम से अगेती अरहर की प्रजाति यू.पी.ए.एस. 120 प्रजाति का बीज फतेहपुर जनपद के बिन्दकी, फतेहपुर

व खागा तहसीलों के विभिन्न गाँवों में उपलब्ध हो गया। आदर्श बीज ग्राम पद्धति परियोजना जून 2010 में समाप्त हो गयी। परियोजना के प्रभावों को देखने हेतु संस्थान के वैज्ञानिकों ने जून के अन्त में परियोजना गाँवों में भ्रमण किया। कृषक चर्चा व खेत भ्रमण में पाया गया कि पिछले वर्षों की तुलना में प्रत्येक गाँव में 30 से 40 प्रतिशत क्षेत्र में अगेती अरहर की प्रजाति यू.पी.ए.एस. 120 बोयी गयी। समिति द्वारा यह भी बताया व दिखाया गया कि भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर से जून 2010 के प्रथम सप्ताह में 1.0 कु. जनक बीज खरीदकर ग्राम अलीपुर व पहर में 7 हेक्टेयर क्षेत्र में गुणवत्तायुक्त बीज तैयार किया जा रहा है जिससे खरीफ 2011 में बीज की उपलब्धता समिति के माध्यम से कृषकों को करायी जा सकेगी। परियोजना गाँवों के अतिरिक्त अन्य गाँवों में भी पाया गया कि अगेती अरहर के प्रचुर मात्रा में बीज उपलब्ध होने के कारण 25 से 30 प्रतिशत कृषकों ने बुवाई की है। संस्थान के निदेशक, परियोजना समन्वयक (मूलार्प) तथा क्षेत्रीय परियोजना निदेशक के अतिरिक्त संस्थान के वैज्ञानिकों ने विभिन्न गाँवों में जाकर कृषकों से क्षेत्र में वृद्धि की पूरी जानकारी प्राप्त की।

समिति के कृषकों के अतिरिक्त अन्य कृषकों ने भी बताया कि अगेती अरहर के क्षेत्र में बढ़ोत्तरी के प्रमुख कारक- जोत का आकार, सिंचाई की समुचित सुविधा, रोग व कीड़ों का कम प्रकोप तथा अच्छा बाजार भाव है। कृषकों ने बताया कि 25 नवम्बर से 10 दिसम्बर के मध्य में अगेती अरहर की कटाई हो जाती है। जिससे समय पर गेहूँ की बुवाई हो जाती है। समिति के सदस्यों ने बताया कि यदि बाजार भाव अच्छा व लाभकर रहेगा तो आने वाले वर्षों में अगेती के क्षेत्रफल में अधिक वृद्धि होने की आशा है।

सुशील कुमार सिंह, राजेश कुमार व राधा कृष्ण

uuru itkfr; kj

आई.पी.एल. 315 : मसूर की यह नई प्रजाति आई.आई.पी.आर. कानपुर द्वारा विकसित की गई है। इस प्रजाति को पी.एल. 4 x डी.पी.एल. 62 के संकरण से विकसित किया गया है और इसकी औसत उत्पादकता 1487 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर है। डी.पी.एल. 62 की तुलना में यह प्रजाति 13.2 प्रतिशत



ज्यादा उपज देती है। यह प्रजाति रतुआ और उकठा रोग के प्रति अवरोधी है। इसे मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उ.प्र. के बुन्देलखण्ड एवं राजस्थान के कुछ भागों के लिए चिन्हित किया गया है।

आई.पी.सी.के. 02 : बड़े दानों वाले चना की इस प्रजाति को आई.आई.पी.आर., कानपुर द्वारा विकसित किया

गया है और इसे हरियाणा, पंजाब, जम्मू, दिल्ली, उत्तराखण्ड, उत्तरी राजस्थान एवं पश्चिमी उ.प्र. के



लिए चिन्हित किया गया है। के.ए.के. 2 एवं जे.जी.के. 1 की तुलना में इसके दाने बड़े (56.0 ग्राम प्रति सौ दाने) हैं। यह उकठा रोग के प्रति मध्यम अवरोधी है।

एस.के.एन.पी. 04-09 : मटर की इस

बौनी प्रजाति को जननद्रव्य डी.डी.आर. 49 से चयनित करके विकसित किया गया है और यह 1711 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर उपज देती है। यह प्रजाति एल. 42 से 15.5 प्रतिशत अधिक उपज देती है और यह चूर्णीकवक से प्रतिरोधी है। इस प्रजाति को पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल और आसाम के लिए चिन्हित किया गया है।

एच.एफ.पी. 529 : मटर की इस बौनी प्रजाति को (एच.यू.डी.पी. 9 x आरकेल) x (एच.यू.डी.पी. 12 x आरकेल) के संकरण से विकसित किया गया है। यह प्रजाति डी.एम.आर. 7 से 20.6 प्रतिशत अधिक उपज देती है। इस प्रजाति की औसत उपज 2555 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर है और यह चूर्णीकवक अवरोधी है। इसे पंजाब, हरियाणा, उत्तराखण्ड के मैदानों, पश्चिमी उ.प्र., दिल्ली और राजस्थान के कुछ हिस्सों के लिए चिन्हित किया गया है।

एम.एन.के. 1 : बड़े दानों वाली चना (52.1 ग्राम प्रति 100 दाने) की इस प्रजाति को ए.आर.एस. गुलबर्गा (कर्नाटक) द्वारा विकसित किया गया है और इसे कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, तमिलनाडु के लिए चिन्हित किया गया है। अन्य अच्छी प्रजातियों जैसे फूले जी. 95311 (15.8 प्रतिशत), फूले जी.



0517 (18.8 प्रतिशत), जे.जी.के. 1 (39.63 प्रतिशत) और के.ए.के. 2 (23.27 प्रतिशत) से इसकी उपज ज्यादा है। औसतन यह प्रजाति 12-13 कु. प्रति हेक्टेयर उपज देती है और यह उकठा रोग से प्रतिरोधी है।

डब्ल्यू.सी.जी.के. 2000-16 : चना की इस प्रजाति को एस.वी.बी.पी. कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ द्वारा विकसित किया गया है और इसे हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तराखण्ड, उत्तरी राजस्थान और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लिए चिन्हित किया गया है। बी.जी. 1003 और बी.जी. 1053 की तुलना में यह प्रजाति क्रमशः 20.04 प्रतिशत और 14.55 प्रतिशत अधिक उत्पादक है। यह उकठा रोग से प्रतिरोधी है और इसकी औसत उपज 24 कुन्तल प्रति हेक्टेयर है।

आई.पी.एफ. 4-9 : मटर की इस प्रजाति को उत्तर प्रदेश के लिए संस्तुत किया गया है। इसे के.पी.एम.आर. 144-1 x ई.सी. 8495



के संकरण से विकसित किया गया है। रचना प्रजाति से यह 18 प्रतिशत ज्यादा उपज देती है। औसतन यह 1665 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से उपज देती है। यह चूर्णीकवक एवं रतुआ रोग के प्रति अवरोधी है।

ekMy i f' k{k.k dk vk; kst u

प्रसार कार्यकर्ताओं को दलहन विकास एवं उत्पादन से सम्बन्धित नवीनतम जानकारी देने के उद्देश्य से संस्थान द्वारा सितम्बर 14-21, 2010 को एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह प्रशिक्षण विस्तार निदेशालय, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से आयोजित किया गया था। उत्तर प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पंजाब, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र से आए 16 प्रसार कार्यकर्ताओं ने इस प्रशिक्षण में भाग लिया। दलहन उत्पादन की उन्नत तकनीक के सभी पहलुओं पर प्रशिक्षण के दौरान क्षेत्र विशेष के लिए संस्तुत प्रजातियाँ, उत्पादन सम्बन्धी तकनीक, जल प्रबन्धन, संयुक्त पोषण प्रबन्धन, कीट एवं रोग प्रबन्धन, भण्डारण प्रबन्धन आदि पर विस्तार से चर्चा हुई। उक्त प्रशिक्षण का उद्देश्य परस्पर सहयोग एवं सहभागिता के आधार पर दलहन उत्पादन को बढ़ाना था।



प्रशिक्षण में 26 गहन सत्र आयोजित हुए। तदुपरान्त विभिन्न प्रयोगशालाओं का भ्रमण

किया गया। संस्थान स्थित बीज उत्पादन प्रक्षेत्रों आदि को भी दर्शाया गया। प्रशिक्षण की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए इसके प्रभाव का मूल्यांकन भी किया गया। संस्थान द्वारा फतेहपुर में चल रही “माडल बीज पद्धति” परियोजना को भी दिखाया गया। प्रशिक्षण के अंत में, प्रतिभागियों को संस्थान के उपयोगी/प्रकाशनों की प्रतियाँ भी उपलब्ध कराई गईं।

vjgj fefyæ ds l g&mRi kn dk [kk | mi ; ksx

संस्थान में अरहर मिलिंग के सह-उत्पाद (छिलके और दाल पाउडर मिश्रण) का प्रयोग कई भारतीय व्यञ्जनों में किया गया। अरहर की भूसी-चूनी मिला कर बरफी, लड्डू, सेव, कचरी, मीठी पूरी, कचौरी मसाला आदि बनाया गया। स्वाद की दृष्टि से इन उत्पादों का मूल्यांकन सन्तोषजनक पाया गया। अरहर मिलिंग के सह-उत्पाद के खाद्य उपयोग से दानों का सम्पूर्ण भाग मानव उपयोग में लाया जा सकता है। साथ ही इसकी औषधीय

उपयोगिता का भी लाभ लिया जा सकता है।

अरहर या अन्य दालों की मिलिंग से प्राप्त कम प्रोटीन और अधिक रेशे वाली भूसी-चूनी को मानव उपयोग में लाने से न केवल कुछ व्यञ्जन बढेंगे वरन् इसका उपयोग खाद्य पूरक के रूप में भी किया जा सकता है।

प्रसून वर्मा एवं राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव

m/ok/kj Fk's kj l s mnZ dh eMkbZ

संस्थान द्वारा ग्रेसर समायोजन में होने वाली असुविधा को समाप्त करने के उद्देश्य से एक उर्ध्वाधर ग्रेसर का विकास किया गया है। इस ग्रेसर का मूल्यांकन विभिन्न आकार की दलहनी फसलों के लिये किया गया। चना और अरहर की मड़ाई इस ग्रेसर द्वारा बिना किसी मशीन संरचना में परिवर्तन किये सफलतापूर्वक की जा चुकी है। इसी क्रम में इस उर्ध्वाधर ग्रेसर का उर्द (उत्तरा) की मड़ाई हेतु मूल्यांकन किया गया।

उर्द के पौधे की संरचना प्रबल होने के कारण इसकी मानवीय थ्रेसिंग एक दुरूह कार्य है। कृषि श्रमिक के द्वारा उर्द की मड़ाई क्षमता मात्र 10 कि.ग्रा. प्रति घंटा पायी गयी। लकड़ी के डन्डे से एक मिनट में लगभग 60 प्रहार करने पड़ते हैं। साथ ही पौधों को हटाने और ओसाई में भी श्रम करना पड़ता है। उत्तरा की 10 कि.ग्रा. फसल से लगभग 2 कि.ग्रा. दाने प्राप्त होते हैं। उर्ध्वाधर ग्रेसर से उर्द की मड़ाई की क्षमता 200 कि.ग्रा. प्रति घंटा पायी गयी। 60 कि.ग्रा. फसल से 13.85 कि.ग्रा. दाने प्राप्त हुए। इस ग्रेसर में ब्लोवर ऊपरी हिस्से में लगा होने के कारण ओसाई में बीज की बिल्कुल हानि नहीं होती। इस ग्रेसर से प्राप्त बीजों में डन्टल (5 से.मी. से कम) की 8 प्रतिशत तथा खुरचे दानों की 1.7 प्रतिशत मात्रा प्राप्त हुयी। अतः इस ग्रेसर को बिना किसी मशीन समायोजन के उर्द की मड़ाई हेतु सफलतापूर्वक प्रयोग में लाया जा सकता है।



दलहनी फसलों के उन्नत उत्पादन

“दलहनी फसलों की उन्नत उत्पादन एवं आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। प्रशिक्षण के तकनीकी” विषय पर दलहन विकास परियोजना, दौरान प्रदर्शन, परिचर्चा एवं व्याख्यानों के

ताल क्षेत्र पटना (बिहार) के सहयोग से 20-23 अक्टूबर तथा 24-28 दिसम्बर, 2010 को दो कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन संस्थान में किया गया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य किसानों को मुख्य दलहनी फसलों



के विषय में नवीनतम जानकारी देना और दक्षता विकास करना था। संस्थान के निदेशक डा. एन. नदराजन ने किसानों को बताया कि वे कैसे अपनी पारम्परिक फसल पद्धति में नई प्रौद्योगिकी को अपना कर ज्यादा उत्पादन

माध्यम से दलहनी फसलों से सम्बन्धित सभी पहलुओं पर गहन चर्चा की गई। प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बिहार के मोकामा, लखीसराय एवं पटना जिले से आए हुए कुल 52 किसानों ने भाग लिया।

संस्थान द्वारा कृषि निदेशालय, उ.प्र. के सहयोग से दिनांक 16 दिसम्बर, 2010 को एक दिवसीय राज्य स्तरीय दलहन संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक डा. एन. नदराजन ने संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए किसानों को सुझाव दिया कि वे एक वर्ष के अन्तराल पर अपनी विभिन्न पारम्परिक फसल पद्धतियों में दलहनी फसलों को शामिल करें क्योंकि इससे मृदा स्वास्थ्य ठीक बना रहता है और किसानों की वार्षिक आय भी बढ़ती है। संगोष्ठी

में दलहनी फसलों के विभिन्न पहलुओं जैसे फसल उत्पादन, सुरक्षा, कटाई उपरान्त प्रबन्धन तकनीकी आदि पर गहन चर्चा हुई। उक्त संगोष्ठी में चयनित जनपदों के कुल 58 किसानों ने भाग लिया।



ग्राम स्तर तक उचित चयनित प्रजातियों के गुणवत्तायुक्त बीज की वांछित मात्रा में उपलब्धता सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर द्वारा चौडगरा किसान सेवा समिति, चौडगरा, फतेहपुर को पंजीकृत कराकर बड़े पैमाने पर बीज उत्पादन कार्यक्रम वर्ष 2008 से 2010 तक कराया गया। परियोजना की जून 2010 में समाप्ति के उपरान्त समिति के सक्रिय सदस्यों से निरंतर सम्पर्क संस्थान के वैज्ञानिकों ने बरकरार रखा। जिससे समिति को बीज उत्पादन में किसी प्रकार की तकनीकी परेशानी न हो। साथ ही राष्ट्रीय बीज निगम, कानपुर के सहयोग से बीज उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए चयनित गाँवों के कृषकों को प्रेरित किया गया। चौडगरा किसान सेवा समिति, चौडगरा, फतेहपुर के मलवाँ विकास खण्ड में आठ ग्राम सभाओं के कृषक सदस्य हैं। समिति द्वारा किये गये कार्यों की समीक्षा तथा अगले माह की रणनीति प्रत्येक माह की दो तारीख की बैठक में तय की जाती है। अक्टूबर 2010 में बैठक में सदस्यों ने चना के जनक बीज (प्रजाति डी.सी.पी. 92-3) के क्रय करने का निर्णय लिया। समिति द्वारा भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान से डी.सी.पी. 92-3 का जनक बीज खरीद करके 5 हेक्टेयर क्षेत्र में बीज उत्पादन ग्राम सभा अलीपुर पहर में रबी 2010-11 में किया गया है। संस्थान के वैज्ञानिकों के दल ने चना के खेत पर भ्रमण करके पाया कि बीज उत्पादन मानक के अनुरूप किया जा रहा है।

साथ ही यह पाया गया कि पिछले वर्ष का उत्पादित चना की प्रजाति जे.जे. 16 व डी.सी.पी. 92-3 के बीज की बड़े पैमाने पर कृषकों द्वारा बुवाई की गयी है। हमीरपुर, बादा व फतेहपुर के कृषकों ने समिति से 14.85 कुन्तल चना का बीज अक्टूबर 2010 में खरीद कर बुवाई हेतु ले गये।

संस्थान के वैज्ञानिकों के दल ने चना के खेत पर भ्रमण करके पाया कि बीज उत्पादन मानक के अनुरूप किया जा रहा है।

सुशील कुमार सिंह

I kef; dh

tuojh I s ekpl vjgj

- ❖ फली भेदक की सामयिक जानकारी हेतु यौन आकर्षण जाल (4-5 जाल/हे.) लगायें। जब 4-5 पतंगे प्रति जाल/दिन मिलने लगे तो कीट नियंत्रण की तैयारी करें। इसी प्रकार फली मक्खी का 5 प्रतिशत फलियों पर प्रकोप होने पर नियंत्रण के उपाय करें।
- ❖ कीट नियंत्रण के लिए प्रथम छिड़काव इन्डोसल्फान 0.07 प्रतिशत अथवा 5 प्रतिशत नीम की निबौली के सत् का करें तथा 15 दिन के अन्तराल पर द्वितीय छिड़काव डाइमिथोएट 0.03 प्रतिशत का करें।
- ❖ अगर उपलब्ध हो तो प्रथम छिड़काव 150-350 गिडार समतुल्य एन.पी.वी. (विषाणु) का करें।
- ❖ उकठा से ग्रसित पौधों को जड़ सहित उखाड़ कर जला दें।

puk

- ❖ फूल आने अथवा फलियाँ बनने के समय 2 प्रतिशत यूरिया का छिड़काव लाभकारी होता है।
- ❖ खेतों का साप्ताहिक भ्रमण कर फली भेदक के प्रकोप पर नजर रखें और यौन आकर्षण जाल लगा कर पतंगों की निगरानी करें।
- ❖ फली भेदक से बचाव के लिए “T” आकर के बांस अथवा लकड़ी के बने 35-40 अड्डे/ हे. लगायें। दाना कड़ा होते ही ये अड्डे हटा दें।
- ❖ कीट प्रकोप होने पर निबौली का 5

प्रतिशत सत्, एन.पी.वी. अथवा इन्डोसल्फान 0.07 प्रतिशत का छिड़काव करें।

- ❖ खेत से सूखे पौधे उखाड़ कर जला दें अथवा गड्ढा बना कर दबा दें।

el j

- ❖ जनवरी-फरवरी माह में बदली अथवा वर्षा होने पर रतुआ व माँहू के प्रकोप की संभावना अधिक रहती है।
- ❖ रतुआ का प्रकोप दिखाई देते ही घुलनशील गंधक 0.3 प्रतिशत अथवा मैकोजेब 0.25 प्रतिशत का घोल बनाकर छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर दूसरा छिड़काव 10 दिन बाद करें।
- ❖ माँहू का प्रकोप होने पर डाइमिथोएट 0.3 प्रतिशत, डायमेक्रान 0.02 प्रतिशत अथवा मिथाइल डेमेटान 0.05 प्रतिशत का एक छिड़काव करें।
- ❖ फली भेदक के नियंत्रण हेतु इन्डोसल्फान 0.07 प्रतिशत, मोनोक्रोटोफास 0.04 प्रतिशत, प्रोफैनोफॉस 0.04 प्रतिशत अथवा नीम के निबौली के 5 प्रतिशत सत का छिड़काव करें।

eVj

- ❖ रतुआ और चूर्णिल आसिता के प्रबन्धन हेतु 0.3 प्रतिशत घुलनशील गंधक अथवा 0.2 प्रतिशत मैकोजेब का छिड़काव करें। गहरी सिंचाई से बचें।
- ❖ फली भेदक का प्रबन्धन मसूर में दी गई विधि से करें।

mnZ , oa epX

- ❖ सिंचित क्षेत्रों में सरसों, आलू, गन्ना और मटर की कटाई के बाद खाली

खेतों में बसंतकालीन उर्द एवं मूँग की बुवाई करके ज़मीन की उत्पादकता में सुधार करने के साथ-साथ 8-12 कु. दलहन/हे. प्राप्त किया जा सकता है। उर्द की उन्नतशील प्रजातियों जैसे पंत उर्द 19, शेखर 2 और पंत उर्द 31, पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा पंत उर्द 19, पंत उर्द 31 और पंत उर्द 35, मध्य एवं पूर्वी उ.प्र., बिहार, झारखण्ड, असम और पश्चिम बंगाल में तथा मूँग की प्रजातियों जैसे पूसा विशाल, पंत मूँग 5, पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश में और मेहा, पंत मूँग 2, पूसा विशाल और सम्राट मध्य-पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड और पश्चिम बंगाल में खेतों में पलेवा लगाकर 10-20 मार्च तक बुवाई कर दें। बसन्तकालीन मूँग की बुवाई 30 से.मी. पर बनी पंक्तियों में करें।

- ❖ आलू के बाद बोई गयी उर्द-मूँग में उर्वरक देने की आवश्यकता नहीं होती, किन्तु सरसों अथवा गन्ने के बाद की बुवाई में 10 कि.ग्रा. नत्रजन, 20 कि. ग्रा. फास्फोरस तथा 20 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हे. देना चाहिए।
- ❖ बसन्तकालीन गन्ना के साथ मूँग व उर्द की अन्तः फसली खेती काफी लाभप्रद है। गन्ना की दो पंक्तियों के बीच उर्द एवं मूँग की एक पंक्ति लगायें। इस पद्धति में दलहनी फसलों को अलग से उर्वरक देने की आवश्यकता नहीं होती है।

vi&y l stw

epk , oamnl

- ❖ सिंचित क्षेत्रों में गेहूँ की फसल काटने के तुरन्त बाद पलेवा देकर खेत तैयार कर लें तथा 10 अप्रैल तक मूँग की अल्पकालिक प्रजातियों जैसे पूसा विशाल और एस.एम.एल. 668 (पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश) तथा सम्राट, एच.यू.एम. 16, एच.यू.एम. 12 तथा टी.एम.बी. 37 (पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, असम और पश्चिम बंगाल) की बुवाई 25 से.मी. की दूरी पर बनी पंक्तियों में करें। बीज दर 25-30 कि.ग्रा./हे. होनी चाहिए। ग्रीष्मकालीन मूँग से भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है तथा 6-8 कु. दलहन/हे. प्राप्त होता है। जो आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त लाभकारी है।
- ❖ पीत चितेरी रोग से ग्रसित पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर दें।
- ❖ श्वेत मक्खी के नियंत्रण हेतु मोनोक्रोटोफास 0.04 प्रतिशत का छिड़काव करें।
- ❖ फूल आने पर थ्रिप्स की रोकथाम के लिए डायमिथोएट 0.03 प्रतिशत, मोनोक्रोटोफास 0.04 प्रतिशत अथवा इन्डोसल्फान 0.07 प्रतिशत के घोल का छिड़काव करें।

vxrh vjgj

- ❖ अगेती अरहर की उन्नतशील प्रजातियों जैसे यू.पी.ए.एस. 120 और पूसा 992 की बुवाई मई के अन्त अथवा जून के प्रारम्भ में खेत में पलेवा देकर 50 से.मी. की दूरी पर बनी पंक्तियों में करें। बीज दर 15 कि.ग्रा./हे. उचित है। बुवाई के समय 15-20 कि.ग्रा. नत्रजन, 40 कि.ग्रा. फास्फोरस, 20 कि.ग्रा.

गंधक/हे. की दर से प्रयोग करें।

- ❖ बुवाई मेंड व कूंड बनाकर मेड़ों पर करें। इससे वर्षा ऋतु में खेतों में पानी का जमाव नहीं होगा तथा फसल की बढ़वार और उत्पादन में वृद्धि होगी।

I kekl;

- ❖ सभी दलहनी फसलों में बुवाई से पूर्व 15-20 कि.ग्रा. नत्रजन, 40-60 कि.ग्रा. फास्फोरस, 20 कि.ग्रा. पोटाश, 20 कि.ग्रा. गंधक व 15-20 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट का प्रयोग प्रति हे. अवश्य करें।
- ❖ सभी दलहनी फसलों के बीजों को फफूँदीनाशक रसायन जैसे कार्बेन्डाजिम अथवा थीरम (2-3 ग्रा./कि.ग्रा. बीज) से बुवाई के 3-4 दिन पहले शोधित करना चाहिए। बुवाई के 8-10 घण्टे पहले उपयुक्त राइजोबियम कल्चर (250 ग्रा./10 कि.ग्रा. बीज) से उपचार करना

चाहिए और फिर छाया में सुखा कर बुवाई करें।

- ❖ समय से निराई करके खरपतवार निकालते रहें।
- ❖ घुन से बचाव के लिए दलहनी फसलों के भण्डारण से पूर्व छनने से छानकर छोटे, कटे व घुन लगे दाने अलग कर दें। अच्छी तरह सुखा कर नमी 10 प्रतिशत से कम कर दें। कुठले को अच्छी तरह साफ कर नीम की पत्ती से धूम्रित करें अथवा मिट्टी में मैलाथियान धूल मिलाकर लिपाई कर दें और सूख जाने पर दालों का भण्डारण करें। अगर बोरों में भण्डारण करना हो तो पुराने बोरों को पानी में उबाल कर सुखा लें। भण्डारण का स्थान ऊँचा व नमी रहित हो। अनाज के बोरों को भूसा, पुआल अथवा लकड़ी का पटरा बिछाकर ही भंडारण करें।

rjkuk nygu dk

बोले सब किसान नर-नारी। दलहन फसल श्रेष्ठ गुणकारी।

लागत कम उत्पादन ज्यादा। दलहन का कर लिया इरादा।

पाया दलहन का वरदान। सुखी और सम्पन्न किसान।

खाओ दालें या नमकीन। सस्ती और सुलभ प्रोटीन।

खेतों में दलहन उपजाओ। दालें खाओ स्वास्थ्य बनाओ।

कृषि वैज्ञानिक अक्सर आते। नयी-नयी तकनीक बताते।

कृषि वैज्ञानिक हमें बतायें। मिलकर दलहन समिति बनायें।

दलहन समिति बनायेंगे। अपने बीज उगायेंगे।

दलहन अगर उगाओगे। मन चाहा सुख पाओगे।

कृषक बन्धु दलहन अपनाओ। ऊसर होते खेत बचाओ।

दलहन का पाया उपहार। सुखमय हुआ ग्राम मौहार।

दलहन भरे खेत खलिहान। अधरों पर आई मुस्कान।

नया जमाना आया है। दलहन को अपनाया है।

अरहर, चना और मूँग की दाल। तन्दुरुस्ती का रखे ख्याल।

राजवन्त सिंह गौतम, ग्राम-मौहार, जनपद-फतेहपुर


fun'skd dh dye | s -----



विगत दशकों में दलहन विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय अनुसंधान हुए हैं। राष्ट्रीय परिपेक्ष में भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान तथा विभिन्न राज्य कृषि विश्वविद्यालयों ने दलहनी फसलों की अनेक उच्च उत्पादक प्रजातियाँ तथा फसल उत्पादन एवं सुरक्षा की उन्नत तकनीकी विकसित की है। इनमें से अनेक प्रजातियों और तकनीकी को प्रगतिशील किसानों ने अपनाया भी है और लाभान्वित भी हुए हैं। फिर भी इनका वाँछित प्रसार-प्रचार नहीं हुआ है।

दलहनी फसलों के उत्पादन से संबंधित विकसित तकनीकी को लोकप्रिय तथा विश्वसनीय बनाने हेतु भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने इस वर्ष विभिन्न दलहनी फसलों पर देश भर में 6000 प्रदर्शन लगाने की योजना बनाई थी। इन प्रदर्शनों के माध्यम से उपलब्ध उन्नत प्रजातियों और नूतन तकनीकी और प्रौद्योगिकी की उत्पादन क्षमता का किसानों के खेतों पर प्रदर्शन किया जाना है। विगत बसन्त/ग्रीष्म तथा खरीफ में 2800 प्रदर्शन देश के विभिन्न प्रान्तों में लगाये गये थे और इस रबी में चना और मसूर पर 3200 प्रदर्शन विभिन्न क्षेत्रों में लगाये गये हैं। विभिन्न क्षेत्रों में गाँवों के समूह चयनित करके ये प्रदर्शन लगाये गये हैं। कृषि विज्ञान केन्द्रों की सहायता और माध्यम से किसानों के खेतों पर लगाये गये इन प्रदर्शनों में प्रमुख रूप से उन्नतशील प्रजातियों, मेड़ और कूँड़ों पर बुआई, फसल पर 2% यूरिया/डी.ए.पी. का छिड़काव, बीजोपचार एवं बीजशोधन, गंधक एवं जस्ता जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वों का प्रयोग तथा समेकित रोग एवं कीट प्रबंधन द्वारा मुख्यतः उकठा रोग और फली भेदक कीट की रोकथाम की तकनीकी समाहित की गई है।

ये प्रदर्शन और इनके परिणाम किसानों, प्रसार कार्य-कर्ताओं, राज्य की कृषि विकास एजेन्सियों और योजनाकारों में वर्तमान दलहन उत्पादन प्रौद्योगिकी में विश्वास बढ़ाने में सहायक होंगे। ग्रीष्म कालीन मूँग की सफलता के परिणामों से प्रोत्साहित होकर किसानों ने अपनाया है और उसके क्षेत्र में आशातीत वृद्धि हुई है। उसी तरह मुझे विश्वास है कि इन प्रदर्शनों से किसानों में आत्मविश्वास बढ़ेगा। वे नई तकनीकी और नई प्रजातियों को पूरे विश्वास के साथ अपनायेंगे। इससे दलहनी फसलों का क्षेत्रफल बढ़ेगा और देश में दलहन उत्पादन में वृद्धि होगी।


(एन. नदराजन)

डा. एन. नदराजन, निदेशक, भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर-208 024 द्वारा प्रकाशित
फोन : 0512-2570264, ई.पी.बी.ए.एक्स. - 0512-2572464, 2572465; फैक्स : 0512-2572582
ई-मेल : director@iipr.ernet.in; वेबसाइट : <http://www.iipr.res.in>

मुद्रक : आर्मी प्रिंटिंग प्रैस, 33, नेहरू मार्ग, सदर कैंट, लखनऊ-226 002. फोन : 0522-2481164, 6565333